

पतितो मद्यत्या निवारितः MBh. 1, 6910. (विहृगः) सीतामभिपतत् R. 2, 96, 43 (103, 42 Gorr.). बधायभिपतितान् MBh. 1, 5981. 6, 2806. Ragh. 7, 84. R. 2, 34, 18. 77, 10. Bhāg. P. 9, 10, 20. Daṣak. in Benf. Chr. 200, 2. सरोष्ठे ऽभ्यपतद्विचम् MBh. 12, 8595. (करीणाम्) कोटीशतसहस्रेण लङ्कामभ्यपतत् 3, 16347. R. 5, 9, 44. 6, 16, 76. (निपत्ता) शक्तिरभ्यपतद्देगाञ्जलमणे flog in der Richtung des Lakshmana 80, 34. herabfallen, herabfallen auf: पुत्राणां तव नेत्रेभ्यो दुःखादभ्यपतञ्जलम् MBh. 7, 6287. यदि वृत्तादभ्यपतत्फलं तत् AV. 5, 124, 2. दिवो नु मां स्तोको ऋच्यपतत् 1. महीमभ्यपतत् — प्रभयं पुरमासुरम् Ag. 10, 30. hineinspringen in, gerathen in, sich begeben in, auf: पुनरपि तामेव संसारवागुरामभिपतितः Prab. 102, 4. सो ऽभिपत्य महाबाहुर्दोर्धमघानमल्पवत् Hariv. 6987. MBh. 12, 11088. — 2) überfliegen, im Fliegen überholen: एकेनैव शतस्यैष पातेनाभिपतिष्यति । कंसस्य पतितं काकः MBh. 8, 1910. durchlaufen: एकेनाभिपतत्पद्मा योन्नानि चतुर्दश 3, 3051. Es ist wohl an beiden Stellen अति स. अभि zu lesen. — caus. werfen —, schleudern auf: भूयश्चैनं (परिघं) तदा धाम्य वरूणायाभ्यापतयत् Hariv. 13902. MBh. 3, 8717 (wo अभ्यापयतो zu lesen ist). hinwerfen Sā. zu RV. 1, 32, 5 und in der Einl. zu 1, 103. hinabwerfen: सार्थिं चाभ्यापतयत् MBh. 6, 1684. 7, 8768. 1153. — समभि losstürzen auf (acc.) R. 5, 41, 34. — ऋच्य herabfliegen, herabstürzen, herabspringen, herabfallen: ऋच्यपतत्तीरवदन्द्वाभ्योर्ध्वस्पर्शः RV. 10, 97, 17. Kauç. 126. श्येनावपातमवपत्य Prab. 66, 14. सो ऽपि कंसो गदां गृह्य रथात्तस्मादवापतत् sprang herab Hariv. 15949. शिरस्यवापतत् fel herab auf MBh. 13, 3715. Hariv. 9455. फलैर्वृत्तावपातितैः R. 2, 28, 12. केशकीटावपातित worauf eine Kopflaus gefallen ist MBh. 13, 1577; vgl. u. पद् mit ऋच्य. Vgl. ऋच्यपात. — caus. niederwerfen: लघूनुन्नमयन्भावान्गुह्नन्प्यवपातयन् (प्रभञ्जनः) Kathās. 23, 42. Vgl. ऋच्यपातन. — ऋच्यव herabfliegen Ait. Br. 3, 25. — आ 1) herbeifliegen, hinfliegen zu, herbeieilen, heranstürzen: पततः (Vögel) — आपततः Naḷod. 1, 21. आ न इषा वयो न पतत RV. 1, 88, 1. 7, 89, 7. 8, 58, 10. 10, 66, 9. श्येनो भूवा विश्वा आ पतन्ताः AV. 3, 3, 3. VS. 3, 43. शरुमापतत्तम् AV. 12, 2, 47. Çat. Br. 3, 4, 2, 10. आपततः — बाणान् MBh. 5, 7183. 7, 4656. आपततयेव दुष्टात्मा संक्रुद्धः पुरुषादकः 1, 5965. 5964. 5982. 3, 5962. तेषामापततो वेगः करिणाम् 3, 2540. अर्दर्शनादापतितः पुनश्चादर्शनं गतः 12, 6473. त्रिपिष्टपादापतितः Hariv. 3181. 3717. रथेनापततस्तव R. 2, 72, 5. Ragh. 5, 50. 12, 44. Rāgā-Tar. 3, 259. Bhāg. P. 3, 2, 24. 6, 1, 30. Daṣak. in Benf. Chr. 187, 3. पौदैः शनैरापततः zu Fusse langsam herbeikommend Bhāṭṭ. 3, 45. प्रबलहोपिनमापततमुच्चैः in der Höhe d. i. mit einem Sprunge heranstürzend Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7, 11, Çl. 40. — 2) herabfallen Rāgā-Tar. 3, 202. fallen in, auf: मृत्योरास्पमापाति Çāṅkī. Br. 14, 2. तत्र काष्ठं कुठारेण पाख्यमानं विधेर्वशात् । आपत्य तस्य जङ्गायां भिन्नातः प्रविशेश तत् ॥ Kathās. 28, 157. — 3) unerwartet zum Vorschein kommen, — sich einstellen, — sich ereignen, Jmd (gen.) zustossen, unerwartet zu Theil werden, — treffen: ह्योरीक्यमापतितम् Sāh. D. 24, 6. कर्ममध्ये या इष्टया व्रातपतीयाद्याश्च आपतन्ति ता ऋण्येयाः Schol. zu Kāṭj. Çr. 1067, 5. नूनं जन्मात्तरकृतं पापमापतितं मरुत् MBh. 3, 2564. शक्य आपतितः सोढुं प्रकुरो र्पुहस्ततः । सोढुमापतितः शोकः सुसूक्तो ऽपि न शक्यते R. 2, 82, 16. देवादापतितो दोषः

6, 100, 5. कृठापतितो लक्ष्मीम् Rāgā-Tar. 3, 522. ऋद्धे न शोभनमापतितम् Pañāt. 143, 23. ऋद्धे शोभनमापतितम् 224, 3. आपादामापतितानाम् Spr. 357. सुखम् दुःखमापतितम् Hit. 1, 164. स्वशिरस्केदं आपतिते Bhāg. P. 5, 9, 21. Duḥrtas. 89, 10. तदिदं ब्राह्मणस्यास्य दुःखमापतितं ध्रुवम् MBh. 1, 6117. आपतत्यात्मनः प्रायो दोषो ऽन्यस्य चिकीर्षितः Kathās. 20, 213. 22, 239. Prab. 64, 6. ऋद्धे चिरदितदस्माकं मरुद्भोजनमापतितम् Pañāt. 21, 12. — Vgl. आपतन, आपति fg., आपात् fgg. — 1. caus. (पतयति) hinzufliegen zu: वेनन्ति वेनाः पतयत्या दिशः RV. 10, 64, 2. — 2. caus. (पातयति) fallen machen, niederwerfen: (तम्) ऊरु आपात्य Bhāg. P. 7, 8, 29. आपातितनरेन्द्रा सा रुधिरा र्णान्तिः niedergehauen, getödtet Hariv. 5598. नास्रमापातयेज्जानु Thränen vergiessen M. 3, 229. — intens. wiederholt herfliegen: ऋच्यैरुत्पायेदमा पतय्यात् (!) AV. 6, 29, 3. — ऋच्यो herbeieilen, hinstürzen zu, losstürzen auf: ऋच्यपतत् — शयनात् vom Sitze aufspringend eille er herbei MBh. 4, 807. ऋच्यपतत् — गीतमस्य रथं प्रति 8, 2631. ऋच्योऽन्यमभ्यापततो निघ्नतो चेतरेतरम् 4, 1041. (करी) तामेव बधूमभ्यापतत् Kathās. 27, 169. — उपा hinzufliegen zu: कंसार्थिव पतत्मा सुतो उपे RV. 5, 78, 1. — पर्या forteilen, davoneilen: कुरवो भयपोडिताः । वीक्षमाणा दिशः सर्वाः पर्यापितुः सहस्रशः ॥ MBh. 8, 4964. आदाय शिविकां तारः स तु पर्यापतत्पुरः R. 4, 24, 21. — समा 1) herangeflogen kommen, herbeieilen, losstürzen auf (in Masse, aber auch allein): ततः श्रेणयः शलभानामिवोद्याः समापेतुर्विशिखानां प्रदीप्ताः MBh. 3, 7213. 7, 7293. तत्र मल्लाः समापेतुर्दग्धो राजसहस्रशः 4, 339. सहसैन्याः समापेतुः 6, 1664. Hariv. 316. समापेतुर्त्र तिष्ठति केशवः 14573. R. 2, 87, 6. Daṣak. in Benf. Chr. 201, 6. सहसैन्याः समापेतुः पुत्रस्य तव वाहिनीम् MBh. 6, 1664. तमात्तबाणासनम् — आपतत्तम् R. 5, 42, 12. Çatr. 14, 218. पवनः पवनाभिक्रतो गगनादवैनो यदा समापतति niederfahren Varāh. Brh. S. 38(37), 1. — 2) zusammenkommen mit (सह), sich geschlechtlich verbinden: ताभिः सह समापेतुर्ब्राह्मणाः । ऋतावृत्ता MBh. 1, 2461. — 3) gelangen zu (acc.), theilhaftig werden: कूर्ष समापेतुः MBh. 1, 7213. — उद् 1) aufliegen, sich in die Luft erheben; aufspringen, einen Sprung in die Höhe thun, auffahren, sich erheben RV. 2, 43, 3. उदपत्तन्मानवः 1, 92, 2. 6, 64, 2. उते व्यश्रिद्धसतेरपत्तम् 6. उदपत्तदौ सूर्यः 1, 191, 9. दिवमुत्पतिष्यन् AV. 18, 4, 14. Ait. Br. 3, 25. 4, 7. TBr. 1, 1, 2, 5. वितत्य पत्तो नभ उत्पपात् MBh. 1, 1335. उत्पतत् इवाकाशे व्यचरंस्ते ह्योत्तमाः 3, 758. 2311. 2849. SUND. 2, 5. Hariv. 2832. R. 2, 37, 30. 3, 55, 30. 5, 13, 9. 10. Ragh. 9, 67. Kumāras. 6, 36. Megh. 14. Varāh. Brh. S. 31, 3. 43, 27. Kathās. 3, 52. 28, 189; Vid. 97. 116. 320. Hit. 14, 8. Prab. 67, 1. Çiç. 9, 15. Bhāṭṭ. 5, 30. 6, 89. (रत्नौघम्) उत्पतत्तमिव R. 5, 74, 38. तस्याः शुलैव वचनमुत्पपात् पुर्धाष्टरः MBh. 1, 6019. 2, 1490. 3, 552. 2375 (med.). 15780. Hariv. 8131. R. 1, 9, 15 (14 Gorr.). 31, 25. आसनात् 2, 34, 16. 3, 50, 19. Suçr. 2, 233, 12. Vet. in LA. 30, 18. (मात्रीरः) सहसोत्पपात् Pañāt. 122, 23. Kathās. 33, 58. Bhāg. P. 5, 8, 3. कथं मूषिकः — एतावदूरमुत्पतति Hit. 27, 19. पतितो ऽपि काराघतिरुत्पतत्येव कन्दुकः Bhāṭṭ. 2, 83. उत्पतितो ऽपि हि चणकः शक्तः किं धाष्ट्रकं भङ्गम् Pañāt. ed. orn. 1, 108. किन्ने स्नायुबन्धे द्रुतमुत्पतितेन धनुषा Hit. 35, 13. sich erheben, aufstehen (vom Schlaf): नाकीर्तयित्वा गाः सुप्यात्ता नासंमृत्यु चोत्पतेत्